

I

१ॐ नमः श्रीगुरुगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्रीदक्षिणकालिकाय ॥ ॐ ॥
गणानेतिहिकपूजाविधिः ॥ ॥ धनदेवस्कंदहावनं यात मूलमंत्र
सकलतिलाहातसिधयः ॥ सकलतर्पणदायः ॥ ॥ नासिधयः ॥ न्यासः ॥ ऊल
पाशपूजा ॥ तीर्थहाधनः ॥ पाशसंवनः ॥ कर्मथनः ॥ धनरथासन
यः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
वायुवीजं तं निवर्तय वक्रपाशितदूर्ध्वकार्वावर्तुनिकपूरकं

तद्वपविपनमैवक्रिवीजं सहस्रं । ॐ नैविन्दैलया नै सिनकमल
 धनैकीनधाना समस्तै हृष्टाकूटं युक्तै दहति कुलमनेमनूतु
 लीहि पापं ॥ ॥ पञ्चमन ॥ तथा पञ्चदिपयसा पञ्चवक्रा निवातिर
 ॥ पञ्चद्वयसमायुक्तै पञ्चमनस्तलापयाम्यहं ॥ ॥ अलिलाना ॥ सुवागकिमि
 वासी सैतत्समित्या नमस्तु मे ॥ अदिसिद्धिप्रदं पूर्णं अलिलानेददाम्यहं ॥ ॥
 चन्दन ॥ श्रीखलुचन्दनं दिव्यं गन्धार्थं समताहनं ॥ आहूतिललाटार्यं चन्द

नैप्रतिगृह्णीता ॥ ॥ सैव ॥ वीरग्वनीमहावीरवीरहृष्टविहृषितं । उला
 काकर्षणीदवीसिन्दुनात्रलमृहमे ॥ ॥ दृष्टि ॥ दृष्टिननुजयं चैव उलाका
 घृष्टद्वयहं । सोलाग्वचद्वयपंचदहिसमस्तपया सदा ॥ ॥ उज्जमका ॥ यद्वा
 पवीतं पनमैपविर्गु प्रजापतर्यं सहजं पुनस्त ॥ आयुष्यमर्गुं प्रतिमञ्चसू
 र्ययद्वा पवीतं पनमसुतज ॥ ॥ कर्तुपताका ॥ कर्तुर्थं उपताका भवद
 क्षितपनमं प्रियं । सर्वसोलाग्वदं चैव गृह्णीतं पनमं वनो ॥ ॥ पञ्चपता

का॥ पताका पञ्चरिः प्राकं पञ्चवर्तु सरः शरितं । पञ्च पातकनामार्थपताका
प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ वो ॥ इति विनामलिदिव्यं पूरुचन्द्रनिर्हं सितं । तनदहनिर्हं
दवीदहिमविकितेरुले ॥ ॥ मालापूर्व्या ॥ नातापूर्व्या हगन्धतिमालाकाकुसुमाद
यशः सोतागधसिद्धिदं हृदयपूर्व्या नाहनमूहमे ॥ ॥ अद्भुतमल ॥ नातावस्तुविचित्रा
सिद्धिनादिसु ॥ शरितं । दवाङ्गुलिमिती ॥ यष्टे वस्तुनं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ यतः पू
जा उपयक ॥ अद्यादि ॥ यजमानस्य पीत्येष्टदवताये यथा पूजानिमित्तं र्थकमनु

लपूर्व्या राजनसमर्पयामिनमः ॥ श्रीसर्वला ॥ कर्पूरं मध्वमाकृति ॥ सिद्धिबस्तु
क्रियति ॥ पूर्व्या राजन ॥ ॥ ततासूर्याधीकृत्यति ॥ ॥ उतत्वेनाचम्य ॥ कीं आत्मन
त्वयि स्वाहा ॥ कीं विद्यातत्वाय स्वाहा ॥ कीं निवर्तत्वाय स्वाहा ॥ ॥ अद्यादि ॥ यजमा
नस्य यथाकार्यं श्रीदक्षिणकालिपंचापचानपूजानिमित्तं र्थं जां कीं संधीतुर्ग्याय अ
र्घ्यं नमः ॥ पूर्व्या नमः ॥ ॥ यतः आत्मपूजा ॥ आत्मधिया ॥ पृथिव्या भूयुक्ता अविष्ट
तले हृदयः कूर्मादिवता आसनवितिशागः ॥ पृथिव्या धृतालाकादवित्वं विष्णुना
धृता ॥ त्वष्टा धर्ममोदवीपविश आसनं कुरु ॥ ॥ पूजा ॥ ॥ शुभं आधनमकथनमथ

ॐ स्वस्ति कालाय नमः॥ कूर्माय नमः॥ अनायाय नमः॥ सिंहाय नमः॥ पृ
थिव्यै नमः॥ कूर्ममुद्रा॥ ॥ दिग्व्यूहा॥ ॐ नमोऽय नमः॥ अग्नय २॥ यमय २॥ वैज
णाय २॥ वज्राय २॥ वायव्य २॥ कुवनाय २॥ ॐ नमोऽय २॥ अनायाय २॥
॥ बुधाय २॥ ॥ दिग्वन्धन॥ ॐ सर्वविघ्नान्नाशाय कुरु स्वाहा॥ ॐ नमोऽय २॥
पद्मसहाय॥ ॥ भवर्त्तिकवचन॥ ॐ कुरु स्वाहा॥ ॥ निमिलिताक्षदुर्ध्वमूल
मधसायामात्माने ध्यात्वा॥ ॥ धनगुणनमस्तु॥ अखिलमखिलसिद्धि॥ पद्माक्षप

जालः कूर्मी लपाइ कां॥ लाहिले॥ वकुलाधन॥ दानवन्धन॥ ॥ धनकलेखनरवात
 दूयके वाय॥ हूं कींदूखाहा॥ ॥ गयपीतसर्वहृत् धर्महाय॥ ॐ बामुमुदयेवि
 ग्रहदक्षिणकाली धीमहीतना॥ ॥ किप्रवादयात॥ ॥ श्रीगुरुस्मानम॥ धीगल
 भयतम॥ श्रीदक्षिणकाल्येतम॥ दिग्वन्धन॥ कींदू॥ प्रालयाय॥ यै१३॥ नै३४
 यै३२ वं१३ लै३४ है३२॥ ॥ अविच्छेद॥ ॐ गुरुप्रीदक्षिणकाली मनुस्यहेनवअ
 धिननृष्टमुन्दक्षिणकालिदवता कीवीऊं हूं ॥ कि३ कीं कीलकी मृतिनृष्टसन

मूलक नांग न्यास ॥ कुं ४ अक्षय रुद्र ॥ ४ ॥ कौं अगु छायां नमः ॥ कौं तर्क नीत्यां २४ ॥ कुं
 मध्यमायां २४ ॥ कुं अनामिकायां २४ ॥ कौं कति छायां २४ ॥ कुं कवगल रुद्र ॥
 २४ ॥ ४ ॥ कुं कौं हृदयाय २४ ॥ कौं मिनसत्वाहा ॥ कुं मिखाये ववद ॥ कुं कववाय
 कुं ॥ कुं नगुयाय ववद ॥ कुं अक्षय रुद्र ॥ ॥ माहकाष उग न्यास ॥ अं
 कं अगु छायां २४ ॥ वं चं नीतर्क नीत्यां २४ ॥ उं टं तु मध्यमायां २४ ॥
 उं नं उं अनामिकायां २४ ॥ उं वं उं कति छायां २४ ॥ अं यं १० अक्षय रुद्र

नष्ट छायां २४ ॥ अथ हृदयादि ॥ ॥ अथ मर्त्य न्यास ॥ कौं नमः ॥ मिनसि ॥ कौं
 २४ ॥ ललाट ॥ कौं २४ ॥ मिखाय ॥ कुं २४ ॥ क्रातवा ॥ कुं २४ ॥ कसपातनपी ॥ कुं
 २४ ॥ कालनख ॥ कौं २४ ॥ मू ॥ दं २४ ॥ वा ॥ थर्थ कथं ॥ किं २४ ॥ मस ॥ सं २४ ॥ वा
 हातिख ॥ कौं २४ ॥ कथूस ॥ लिं २४ ॥ पालाहातनिपी ॥ कं २४ ॥ नगल ॥ कौं २४ ॥
 वक्रनिख ॥ कौं २४ ॥ दुगथस ॥ कौं २४ ॥ तसूस ॥ कुं २४ ॥ लिंगस ॥ कुं २४ ॥ वधि
 निख ॥ कौं २४ ॥ गुक्कस ॥ कौं २४ ॥ लाहातनिपी ॥ स्वां २४ ॥ पाटिपाट ॥ हां

[illegible]

हा ॥ कूर्ममूढांदर्शयन् ॥ ॥ ऊप ॥ इमां स्तुं स्त्राहा ३ ॥ मूलत १० ॥
 अमृतमूढानवात् ॥ मूलं त्रैलोक्यं नमः ॥ ३ ॥ षष्ठं नमः ॥
 आवाहनादि ॥ यानिमूढा ॥ अथ अर्घ्यपात्र ॥ ॥ ततारु
 तमुद्धि ॥ पालिं निस्यं प्र० ता, पृथ्वीस्थान ॥ ॥ पृ० त्रिस्यं, तद्रूता, ज
 लस्थान ॥ ॥ वै ॥ ॥ तद्रूतिस्यं, हृदयता, तजस्थान ॥ ॥ त्रिकाश ॥ ॥ च नैवी
 ज ॥ ॥ हृदयतिस्यं, कै० ता, वायुस्थान, प्रकाश ॥ ॥ द्ययं वीज ॥ ॥ क०

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निर्णय कपालता आकाशस्थान वाक ॥ ० हं वीज लालप ॥ मूलमकुवावा
व ॥ आत्मनपाप कदनीनमध ॥ धतदतमुद्रि ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ कीवन्दनी २४
॥ ॐ रुं नकचन्दनं २४ ॥ ॐ कीमृकती २४ ॥ ॐ वीनरुसहिन्दनं २४ ॥ ॐ सर्वज
नमाहित्ये २४ ॥ ॐ रुं नाता कृणालकावपुष्य २४ ॥ गुनतर्प्यसमालस ॥ क
मोपाइकी ३ ॥ ॐ की श्रीगुनतर्प्ययामि ३ ॥ ३ पनमगुन ३ ॥ ३ पनमाचार्य
गुन ३ ॥ ३ निजगुन तर्प्ययामि २४ ॥ ॐ आत्मपूजा ॥ ॥ आवाहन ॥ मालि
३ पनमहिगुन ३ ॥

ॐ ऐं ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

नो यथा ० पू॥ मंगी गू ग ४ (सं) कल ग १६ ॥ यथा ० पू॥ वलि ॥ अमुं तिष्ठि यागिनी य ४ पा ० पू॥
 ॥ वलि ॥ धन सना यथा ० पू॥ को को को ४ ४ को को गुपाल यथा ० पू॥ ॥ वलि ॥ धूप दीप ॥ द
 म ॥ ॥ ॥ थन पश्चिम या विमल सयाय ॥ ॥ शिव पूजा ॥ कले गुर्जनो ग
 हा, सगमन, कलकन, सिधु मूढ, कूर, शिवल, पूजा ॥ ॥ न्यास धारादि
 धमन रुका याय ॥ कालिया, न्यास धूनक ॥ ॥ थन गुर्वप कूा दिन कथ
 नैद क्रिस मथ काल पूजा धूनक ॥ ॥ थन दक्रिस कालिया पूजा न
 लठा व, न्यास याय ॥ ॥ को को को ४ मूलाय रु ४ ॥ कू कू को मूगु
 छाया नम ॥ को को, को नरु नी ली २४ ॥ दक्रिस कालिक कू मध्व मा ली २

४॥ को को कू अनामिका ली २४ ॥ कू कू को कतिष्ठिका ली २४ ॥ को को को ४
 कनक लष्ट छा ली २४ ॥ धर्ध रुद यादि ॥ ॥ आवाहन ॥ मुख प्रसन्न
 वदनां स्मना तन सना नू ही ॥ महा काली वू हा ग क, मगना लय वाहिनी
 मू ॥ ॥ अहि रग वति दक्रिस कालिका, मध्व सपा इका मा वू क पूजा कृत
 मा ग क ॥ श्री दक्षि कालिका सागम सप विवा ना वू दमा वाह यिषा मा वा
 हय ॥ धप न पा डा, खडा क्रा सन दव पिका ली य कृत सन य ॥ दवी डा महा

काला विष्णु कालपाडा ॥ ॐ हाग क २ ॐ हति ४ २ ॐ हसं नि (ध) हि २ ॐ
हसनि नू इ त्व २ ॐ हाव गु ॥ ॐ हव २ मूल न ऊ प त्य कु स १ ॥ ॥ थन जाले
पूजा ॥ ॐ जीं थीं च तुर्दि कू महा शि वा स न त्य ४ पा इ की ॥ ॐ कूं महा काला स
न पा इ कां ॥ ॐ जीं सदा शि व थ ता स ता य पा इ की पू ज या मि २ ॥ ॐ न ॥
क ना न व द तीं घा नी मू क के णी ॐ तु र्जु जी । कालि की द क्रि स न्द वी मू
लु मा ला वि रु धि ती ॥ स य धि नु न शि न ४ त्व ज वा मा र्धा ध क ना न्द जी ॥ ॐ

रथे व न द चे व द क्रि स (र्धा ध) पा लि कां ॥ महा म ध पु ली ॐ मी त रथे व च
दि ग म्ब नी । क ल्हा व स क मू ली ग ल द धि न च र्जि ती ॥ क र्जु व ती स ती
ली क ल्हा व यू ग्म रु या न की । घा न डी हं क ना ला र्थी पी ता न्न त प या ध
नी ॥ स वा ती क न र्थ घा र्थ क त का र्जु ह स न्म र्थी । ह क द य ग ल द क
ॐ ना वि रु धि ता न ती ॥ घा न नू र्पा महा नो डी ॐ ॐ नाल य वा सि
ती । द नु नो द क्रि स व्या पि मू काल नि क वा च यी ॥ स व रू प महा द

तर्प्यमाभिस्वाहा ॥ वृं सो पूजा वर्ति गृह कर स्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ धनू आ
 ति का अ वि इ मू डी द ध य म ॥ ॥ त्रिका मदि द व ता सा पा पू त ॥ वर्ति ॥ थ
 नरे नव पूजा ॥ त्यास ॥ ॐ मू क्रा य रु ट ॥ ॐ अं श्रीं लि खा य पा इ कां ॥ मि खा स ॥ ॐ
 ॐ ॐ श्रीं शिव स्तान पा इ कां ॥ माल स ॥ ॐ उं तुं ल ला ट ॥ क पा ल स ॥ ॐ अं अं
 मुख ३ ॥ कू उ स ॥ ॐ ॐ ॐ न उ ३ ॥ मि खा स ॥ ॐ उं उं क लु द य ३ ॥ कू स पा तु ति
 र्व ॥ ॐ हां डीं अ ध न जि द्वा द का क ॥ ३ ॥ कू उ सि म उ म क थु र्सी ॥ ॐ अं

ॐ गल ग ॥ ३ ॥ गल पा त द ता ल र्सी ॥ ॐ मू क्रा य रु ट ॥ ताल थ य ॥ ॥
 आ ल पू जा ॥ ॐ आ धा न र्सी क थ य ॥ ॐ उं ता त ना य ॥ धा न ॥ उ क व रुं पि
 न र्सी व का ध नू प ध ना य च ॥ नी ल जी मू त र्सी का र्सी नो ड नू प रु य क र्नी ॥ मू
 लु दि हा न रु र्गी व्या घ्रां क टि ह वि र्नी ॥ उ म नू र्व द्वा ज ह रु ॥ क रुं क
 पाल धा न र्सी ॥ उ र्व धा त्वां ऊ य द व म म ना धि प त न म ॥ धा न पु
 र्नी न म ॥ ॥ ॐ आ वा ह न ॥ डी ला प न ॥ श्री ह नि धा न ॥ ॐ स वि

[illegible]

不
可
不
知

पूजा ॥ ॐ काल्यै पूजयामि, तर्पयामि नमः ॥ ॐ सकल, पू. त ॥ ॐ क
पालिन्यै पू. त ॥ ॐ कलार्थे पू. त ॥ वलि ॥ ॐ मां पूजा वलिं गृह्ण
स्वाहा ॥ ॐ तिपथमा वनर्षी ॥ ॥ ॐ कलाकलार्थे पूजयामि, तर्पय
मि नमः ॥ ॐ विनाधिन्यै पू. त ॥ ॐ विप्रचिन्तार्थे पू. त ॥ वलि ॥ ॐ मां
पूजा वलिं गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ तिद्वि तिया वनर्षी ॥ ॥ ॐ उग्रार्थे पू. त
॥ ॐ उग्रप्रहार्थे पू. त ॥ ॐ दीकार्थे पू. त ॥ वलि ॥ ॐ मां पूजा व

लिं गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ तिहृ तिया वनर्षी ॥ ॥ ॐ नीलार्थे पू. त ॥
ॐ घनार्थे पू. त ॥ ॐ वलार्थे पू. त ॥ वलि ॥ ॐ मां पूजा वलिं गृह्ण
स्वाहा ॥ ॐ तिचतुर्थ वनर्षी ॥ ॥ ॐ मां गार्थे पू. त ॥ ॐ म
दार्थे पू. त ॥ ॐ मित्रार्थे पू. त ॥ वलि ॥ ॐ मां पूजा वलिं गृह्ण स्वा
हा ॥ ॐ तिषेवमा वनर्षी ॥ ॥ तद्वहिः ॐ अष्टपुत्र ॥ ॐ आं वक्रा
ल्यै पादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः ॥ ॐ ॐ नाना यल्यै पा.

पू.त॥ ॐ तुं मा ह र्ग्य पा पू.त॥ ॐ अं चामु लुये पा.पू.त॥ ॐ तुं को
नाय्य पा.पू.त॥ ॐ तुं म्प नाडिताये पा.पू.त॥ ॐ ओं वा ना के पा
पू.त॥ ॐ अः ना न हि के पा.पू.त॥ वलि॥ ॐ मी पूजा वलिं ग कर स्वा
हा॥ ॥ तता रूप पून॥ गं गी गूं गं १ एलि ग हा प त य पा इ कां॥ वों वी वूं व डू क
ना थ य ३॥ कों की कूं कू पा ला य ३॥ यों यी यू भा गि न्ये ३॥ ॥ तता दाना दि दि गू
जा॥ ॐ नूं नूं ना य न म ३॥ ॐ मूं मूं म न य २॥ ॐ यं य मा य २॥ ॐ नें नें अ ला य न २

ॐ वै व नू ल य न॥ ॐ वौ वा यु व २॥ ॐ कूं कू व ना य २॥ ॐ नूं नूं नी ना य २॥
ॐ अूं अूं न का य २॥ ॐ उं उं मू ल २॥ अ वा ह ना दि॥ ॥ तता स रु पू जा॥ रं रं अ
य न म ३॥ मूं मूं लु य २॥ वं व ना य २॥ अूं अूं र या य २॥ ॥ कों ह द या दि व उ डू न
पू जा॥ अ वा ह ना दि॥ या नि मू डी द र्श य न॥ विं डू ३॥ ॥ थ न य जा म्ना या दि
थ म ला क न पू जा॥ ॥ कि न म स्ता पू जा॥ श्री ॐ कूं उं व डू वे ला च नी य ॐ ॐ
रू द्वा ता श्री कि न म स्ता द व्ये पा.पू॥ वलि॥ अ वा ह ना दि, या नि मू डा॥ ॥

उग्रचरु महिषमर्दिनी पूजा ॥ ॐ जी नाऊषद सुं उग्रचरु विपूमर्दिनि हूं
ॐ सदा नक्र २ त्वा मां हूं स ४ मृ त्यु ह ने पा इ कां ॥ वलि र्थ ॥ ॐ महिषमर्दि
नी य स्वाहा ३ ॥ र्थ वलि ॥ ग्री वाह नादि ॥ मृ डा ॥ थन निर्वा ल या माल का पूजा ॥
निर्वा ल या विधिः ॥ ॥ कू लू का ॥ मि न स ॥ ॥ स उ ॥ नृ ग ले स ॥ ॥ अ पा धा न ॥ ना
हि स ॥ ॥ थन वलि विषय ॥ पश्चिम या निर्य ॥ ॥ दक्षि म या वलि ॥ ॐ ३ हूं २ ॐ २
दक्षि म का ल्या य कु लि त द व द वी र्या, उ का न क र्या, वलि गृ ह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ

ॐ श्री रू मे ग ल प ति, श्री ॐ व दू क कां हृ त्वा श्री मि नी र्या वलि गृ ह्ण २ स्वाहा ॥ मूल
या ॥ ॐ हं हं हं नी ल धृ शी मूर्ति सै का र्ण धा न डं द्रु त या व हा ॥ पु र्ण क म च न का
कं क उ पा ल वृ का द नं ॥ अ हि २ गु वृ २ मू वृ २ ह न २ त्वा २ श्री च लु का पा ल म्भ न
नृ प न, म म स मा य न क २ म म न कं द हि २ स र्व म ग्नु क द य २ ॐ मां वलि गृ ह्ण २
स्वाहा ॥ ॥ ॐ उ क्ति हि ज ग तां मा त कृ ग तां ज न नी त था ॥ गृ ह्णं २ ॐ मी ति र्य व
लि दा न म त ४ प नं ॥ सि धिं द हि, सि धिं द हि, ग क् क र्य कृ वृ २ हूं २ न म ४ हृ द्

आश्विन सरुकाधि

2011	I
------	---

ASHVIN SARUKA

[illegible]

यः मानस्य यथा ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ लघिना कृत्वा हृत्प्राप्तिकामः श्री दक्षिण काला पूजा
वर्तिगुरु २००० ॥ कुरु मृत. नक्षत्र पूजासिद्धि दक्षिण कुरु हृत्प्राप्ति ॥ ॐ नमः यथा ॥ ॐ
उचपनागति ॥ ॥ जापचयसविय ॥ जीभूततापि धीनमसि स्वाहा ॥ ॥

॥ १० ॥ उपसमर्प्य सी ॥ ॐ श्रीं ह्रीं स स्वाहा ॥ गुक्ता
५४ ॐ प्राणायाम स्वाहा ॥ ॐ ध्यानं स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा
ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ ॐ उल्लस्य स्वाहा ॥

वीजक मातनत हि पुनहनवधूति कृती पंजपति । तमांगशानिपशानिच
 मुखकहनाइ शेर एववाच ४ स्वकन्द धनक धनाधननूचिनुचिनसर्वसिद्धि
 गताती ॥ ॥ समासस्वकी कृतीजपति विपनितीयदिसदाविचिन्त्यत्याध्या
 यन्नतिसयमहाकालसु ली तदातस्य कासीतलविहनमास्यविदूष ४ कना
 भूजवध्याहनवधूमहासिद्धिनिवहा ॥ ॥ कुरुमादी वन्दे तमनू सनति
 उमतनले वमस्तस्य कासीपति नपिकु वनप्रतितिनिधि ४ विपू ४ कानगभने कल

यतिवतस्तलिकलया विनंश्री वन्तूक ४ पुरवतिसहक ४ प्रतिकनिध ॥ ॥ नाशे
 गुहसमाजनलेविलसद-धूकपूव्यानूली तस्य हास्वनमधुली तइयत तशानि
 चर्कमहत् । तन्मध्यविषयी तमेधुननतप्रभुमन्त्रका मिनी पदद्वाननूत्त
 र्क काटिविलसक ४ स्वनूपा मिनी ॥ ॥ धनमा लक फाग ॥ पापा हे पापक
 र्मा हे पापात्मा पापसेरव । गहिमी कालिकदविसर्वपापहयहन ॥ ॥ म
 न्यगभनर्ल नाहित्वमवगनर्ल ममा तस्मात्कानूत्त हावेन नकी मी पनमग्यनी

अंगुगन्धदि ॥ ॥ यातिमूडान् दवीहृत्ताकपूर्यकामना तावतायाय ॥ ॥ तर्प
 लयाय ॥ ॐ श्रीतिष्ठतासादि ॥ ॥ दवीहृत्प्रार्थना ॥ गुनस्त्वमिवस्त्वमसि स्त्वमे
 भवे त्वमवाहिमाता त्वमवाहिपीता त्वमवाहिविशाल्वमवाहिवृद्धिः गतिस्त्व
 मतिस्त्वमेका कालिक ॥ थमदकयाय ॥ ॥ थनचूपिपूजा ॥ लखनसलहट्ट
 ॥ चतुस्तनय ॥ पूजा ॥ ॐ ॐ ॐ कालि २ वङ्गध्वनी लाहट्टुयनम ॥ ३ ॥ मूलाद्य
 ग्रन्थपूजा ॥ ॐ श्री उमवागीध्वनी स्त्री २॥ ॐ श्री लक्ष्मीनामाय नमः स्त्री २४ ॥ ॐ श्री

उमासहस्रनाम्नी २४ ॥ ॐ उम विष्णु शिवात्मन गच्छि युक्ताय खजा
 य २४ ॥ ला प्र ॥ प ॥ म ॥ क ॥ ल ॥ ख ॥ ना ॥ म ॥ य ॥ न ॥ कि ॥ का ॥ र्ण ॥ य ॥ त ॥ स ॥ न ॥ ॥ प ॥ गु ॥ ङ ॥ द ॥ त्व ॥ या ॥ मी
 धुरवङ्ग नाथनमस्तुत ॥ ॥ थनपञ्चहयाव ॥ लाहातथूनसिल ॥ नि
 र्मकन ॥ ॐ ॐ ॐ अमुयदद ॥ ३ ॥ लायविवि धका नातनदिव्याक निरुग्म
 । पातालतलवासिनामनसस्तु शिवाह्वया ॥ मतविय ॥ ॐ मन्त्री वल्पातिरुका
 चतुर्लोक लामिदवता । वेदितास र्धतय अतिनूयनमास्तुत ॥ ॥ अर्घ

पाठयागुलीतहाय ॥ ६८ ॥ हूं अवगुलनं ॥ वें धनुमूडाम तीक नर्स ॥ ॥ अग
यचन्दनं २ ॥ सिंदूरनूपूर ५५ ॥ न्यास ॥ पूजा ॥ ओं ह्रीं गायत्र्यम ॥ ३ ॥ ओं आत्म
तत्त्वाय २४ ॥ ओं विद्यातत्त्वाय २४ ॥ ओं भिवतत्त्वाय २४ ॥ ओं हृदयादि पूजा ॥
ओं पशुभाकली २४ ॥ पशुयागमनु कन ॥ ॥ ओं पशुपागमय विग्रह विग्रह
कर्माय धीमहि तन्नाडीवपुचादयातु ॥ ॥ समयनक ॥ सकल्य ॥ अथादि
वाक्य ॥ यथा पूजा निमित्तं पञ्च विंगति वर्मा वक्ति नर्स उष्ट्र प्रविकाम ॥ धीद

हिसकालिदयं नृदेकागवलिं वक्ति देवर्गं मुख्यमहं घातयिष्य ॥ ओं हूं पशुं
हासदवनिपूरुयाचापयाविता ॥ अस्यापि स्वर्गसंपादं दहिचाम्बु कालिक ॥
पूर्वजन्मकृता ४ पापास्य पुजन्मनि जायता ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्त ॥ स्वर्गलाके सु
गच्छति ॥ मूहायक ॥ ॐ हूं ॥ ॥ ॐ कुं ४ अक्षय ६८ ॥ घाटयन्तु ॥ ॥ ॥
पशुयागमा उच्छाय ॥ यथा खडास ॐ घातं दंष्ट्रा कनाला सति ॥ कुलसम
तविय ॥ ॐ अक्षय ४ वहिस्तु ४ प्रकी कृत्य जगज्जय ॥ विधाय योपनिजा

मङ्गलदीपनिवदयन् ॥ उँ समस्त चक्रद वमियुत दवीनवात्मिक । भूना
गिकमिददीपगृहानममसिद्धय ॥ ॥ गमयतीमनुत, धर्मापातय ॥ ॥
खावत ॥ धनकावहानसाधन ॥ स्वाहाश्रुक्रायरुदू ॥ ये. धवीजन, गढताल
य ॥ न. धन. मीननवतालप ॥ वं धनश्रुत तशडातालप ॥ धिस्तीतय ॥ उँ
क्रीं श्रीं क्लीं ॥ ॥ गमयती ॥ क्रीं सः च उचू जायविग्रह कूर्कूयधीमहितन
श्रुतप्रवादयात् ॥ ॥ हाथजालपे प्रार्थना ॥ त्वंगह्वयनमैलाकात्वेमिवमिव

मादय ॥ घाटयामिमहाहागमकालिकाप्रीतयहव ॥ मूलकन ॥ सेकल्प ॥ दम
वर्षावहिनसेतुष्टाफिकामः ॥ उँ दे कूर्कूटवलिपुजापतिदेवत ॥ ॥ पद्धि
यामिनक्यथडाऊवस ॥ ॥ हेसया ॥ ॥ स्वाहा ॥ धनमालसधिय ॥ गमयती
॥ हेसतयायविग्रहदूर्गदवीधीमहि ॥ तन्नाहीसप्रवादयात् ॥ वाक् ॥
॥ उँ दे हेसवलिपुष्पदेवत ॥ ॥ धनदुगु पूजा ॥ धनविशेष ॥ ॥ खापा
खन ॥ सकलसंदवजय ॥ ॥ धनमालसा, श्रीकृष्णविपूजा ॥ ॥ दक्षिण ॥

वृकनसमयकाय. सकलसंकाय॥ भिनकाकाय॥ ॥ ॥ नाडियागल
लसाथनेनिस्य॥ ॥ मखतसा. श्रीदवसु. कलभरिषक॥ उका नैवायुवी
ऊति॥ चन्दन॥ श्रीखलुति॥ सिंधुवी नभनीति॥ माहनी॥ माहनेका
सिद्धिसुकायाककुलसुथा। अऊनेचहु सासायी माहने दष्टिदायक
॥ सग्वन॥ दध्वकनसमायुक्तिलकी यत्कनाम्यहे। सर्वसो लाग्य दीचेव
लक्ष्मीनाई ददातिच॥ स्नान॥ नातापुष्यति॥ ॥ थनस्नानक काय॥ ॥

क्रसकनगस्य. सकलसंकाय. कलसाहिवक चनस्नान विय॥ क्रसकनकन॥
साकिथय॥ ॥ थनभकिरु. कसुजाय॥ तर्पलयाय॥ पुनपुतादिन. ऊ
यति काभीवीदले धूनक॥ ॥ थनदवाभीवीद॥ एकान्यक रवति मूर्ति
सतकति॥ ॥ स्वाभीवीद॥ अश्वपूर्वगते पनति॥ थनदूधनीस्क कमा
शन॥ ॥ स्नानक काय॥ ॥ वलिथय॥ ऊं आचमनीय स्वाहा॥ ३॥ ऊं
अकाय हट्॥ ३॥ ऊं २॥ ऊं २॥ ऊं धीं ऊं ऊं ४ अकाय हट्॥ सीहानम

ज्ञानः दवीधडा कलीनयाय ॥ न्यासलिकाय ॥ साक्षिथाय ॥ ॐ क्लीं
दक्षिणकालिपंचायचानपूजासंपूर्णार्थं ॐ क्लीं श्रीसूर्याय साक्षि
अर्घनमः ॥ पूर्ण २४ ॥ ॥ निर्माल्यपूजा ॥ क्लीं निर्माल्यवासिर्नमः ॥ ३ ॥
॥ ॥ धनयुक्तताय ॥ आयुः प्रियञ्ज कल्याणपूजपोठधनानिच । हवती
त्वत्प्रसादनसर्वकार्यञ्च सिद्धिद ॥ स्वानंदय ॥ ॥ वीनशास्त्र ॥ मुखमु
द्धि ॥ ॥ वृत्तिश्रीदक्षिणकालिकापूजाविधिः समाप्तः ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥

सम्बन्ध २९ माघशुक्ल ॥ षष्ठिवृधवासनकूकनाजमानहिहृदेवहन
ध्वजपत्रमध्वनीप्रितियायकामतानवायसिद्धयकाक्रमायायमाल
तिविष्ट्रयायमाले, मंगलशयकाडापत्रमध्वनीयादपादयमालश्री

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीलक्ष्मणाय नमः ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥ श्रीपूजा वि
धि ॥ ॥ आचमनम् ॥ सूर्यार्घ्यः ॥ अथादिश्रमन्तु गी
कालिका ॥ देवतानिषावतपूजा निसिपार्थ ॥ कनक
मरुतशीसूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ पूर्यं नमः ॥ ॥ गुननमः ॥
आदिन्यासः ॥ कलपाय अर्घ्यं पाशपूजा ॥ ॥ रुद्रसहि आत्मपू
जा ॥ आवाहनम् ॥ श्रीरुद्रकालिदेवतासगनपनिवा नमः ॥

आदिस्तनवदनाक्रान्तिरुनपूर्ययथविधानेन संप्रति यथा ॥
॥ ॥ रुद्रचण्डादिबुद्धाश्वादिपूजनम् ॥ ॥ आदोदयचण्डादिपू
नम् ॥ शिवपूजनम् ॥ ॥ श्रीहस्तासनाय नमः ॥ जंशं रुद्रचण्डादि
ही ॥ दक्षी अस्मिन्नाद्रुतेन वसहिताय पादुकां ॥ वलि ॥ ॥ श्री
स्ताय नमः ॥ ॐ ॐ ॐ प्रवक्ष्यामि ह भवती दक्षी नूतनेन वसहिताय
कां ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ श्रीमयूनास्ताय नमः ॥ ॐ ॐ वरुणाग्रये नमः ॥

वीवसु रेंववसहि नायपादुकां ॥३॥ वलि ॥ ॥ श्रीगजाननाय नमः ॥
 अं अं वसुनायिकाये वेषु वीदवी काधरें नवसही नायपादुकां ॥३॥ वलि ॥ ॥
 श्रीमहिषास्त्राय नमः ॥ ॐ वसुनायिकाये वा नाहिदवी उल्लरें नवसहि नायपादुकां ॥३॥ वलि ॥ ॥ श्रीगजाननाय नमः ॥ नं नं वसुवर्षे नं द्रायस्त्रीदवीकाया
 लीरें नवसहि नायपादुकां ॥३॥ वलि ॥ ॥ श्रीप्रतापनाय नमः ॥ ॐ ॐ
 वसु नृपायिकाये दवी लीमरें नवसहि नायपादुकां ॥३॥ वलि ॥ ॥

वसु ॥ सही नमः ॥ श्रीगजाननाय नमः ॥ उरें नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 उरें नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 इतः पुनः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥
 वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥ वीवसु नायिकाये नमः ॥

लाल॥ उग्रव श्रुवा मूलमंजन॥ ॐ की मारु प्रम कुं उग्रव श्रु वलममदीनि हं
 ॐ सदानकर त्वां मां हं स ४ म लूह न श्री पाइ कां॥ ३ ॥ बलि॥ ॥ अघा व द
 वती सी ने॥ १॥ २॥ ३॥ ॐ अघा व द्वां थ घा व द्वां घा व घा व न व द्वां ॐ सर्वत
 सर्व सर्व ॐ हं स ४ ॐ नू द नू प द्वां पाइ कां॥ ४॥ ॐ अ व द्वां कू वि नी कुं उला का
 कर्ष सां की कामा ज्ञ डा व ती कुं कुं महा का ह का व ती ॐ सौं स ४ थो पाइ कां
 ॥ व॥ ॐ अ न मा ह ग व ति कुं कू वि का र्थ ॐ की कुं घा व अघा व अघा वाम

लिङ्गं द्वीकिनि २ विष्णुपादकी ॥ ॐ नमो भगवती कुं कृष्णकाये स्तुं ह्रीं
 स्तुं दं ॐ लं नं मं ऋषा नामस्वी कौं द्वीकिनि २ विष्णु पादकी ॥ ॥ ॐ नमो
 भगवतिसिद्धि कुं कुं कृष्ण स्तुं ह्रीं ह्रीं षण्मघानमघानमघाना
 मूखी कौं द्वीकि नि २ विष्णुपादकी ॥ ॥ मूलप्रिया अलि ॥ ॐ
 नमो भगवतिसिद्धि कुं कुं कृष्ण स्तुं ह्रीं ह्रीं षण्मघानमघानमघाना
 मूखी कौं द्वीकि नि २ विष्णुपादकी ॥ ॥ मूलप्रिया अलि ॥ ॐ
 नमो भगवतिसिद्धि कुं कुं कृष्ण स्तुं ह्रीं ह्रीं षण्मघानमघानमघाना
 मूखी कौं द्वीकि नि २ विष्णुपादकी ॥ ॥ मूलप्रिया अलि ॥ ॐ

वाममुख्यपादकां ॥ २ ॥ ॐ तिष्ठिया अरुति ॥ वलि ॥ ॥ गायत्री ॥ ॐ नमः
रुद्रकालिविग्रहवाममुख्यधीमही तन्ना कालिप्रवादयात् ॥ ॐ ॥ ॐ
रुद्र ॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ षोडशमालिनीन्यासः ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ननादि
नैरे श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॥ शिष्यायां ॥ ॐ पंथं ग्रसन्ये पा ॥ सिरसि ॥ ॐ पंथं निवृत्त्ये पा ॥ ॐ
पंथं प्रतिष्ठायै पा ॥ ॐ पंथं विश्रायै पा ॥ ॐ पंथं शान्त्यै पा ॥ ॥ रुद्राशिरोमालाया
कलावृत्तिः पूर्ववत् सर्वन्यासेषु ॥ ॐ पंथं चामुराडायै पा ॥ तृतीयनेत्रे ॥ ॐ पं

थं प्रियदर्शिन्यै पा ॥ नेत्रयो ॥ ॐ पंथं गुह्यशक्त्यै पा ॥ तामीयां ॥ ॐ पंथं वज्रिण्यै पा ॥
वक्रस्थाने ॥ ॐ पंथं कंककटायै पा ॥ ॐ पंथं कालिकायै पा ॥ ॐ पंथं शिवायै पा ॥ ॐ पं
थं घोरमुख्यै पा ॥ ॐ पंथं वीर्यै पा ॥ ॥ रुद्रा उर्ध्वधोदंतपत्न्यै पा ॥ ॐ पंथं माया
देव्यै पा ॥ जिह्वायां ॥ ॐ पंथं वागेष्ट्यै पा ॥ मुखे ॥ ॐ पंथं नारायण्यै पा ॥ कर्ण
यो ॥ ॐ पंथं मोहन्यै पा ॥ ॐ पंथं पुत्रायै पा ॥ भूद्वयो ॥ ॐ पंथं शिखिवाहन्यै पा ॥
कण्ठे ॥ ॐ पंथं लामायै पा ॥ दक्षिणवाहो ॥ ॐ पंथं विनायक्यै पा ॥ वामवाहो
॥ ॐ पंथं पूर्णिमायै पा ॥ हस्ततले ॥ ॐ पंथं रंकारिण्यै पा ॥ दक्षहस्तांगुली
षु ॥ ॐ पंथं कुर्दयै पा ॥ वामहस्तांगुलीषु ॥ ॐ पंथं कपालिन्यै पा ॥ वामहस्त

कपोतो॥ सें प रं दी य न्ये प॥ शूल द रोदु॥ सें थ जं ज यं त्ये प॥ त्रिशूलाये॥ सें भं भीष
गोये प॥ दक्षस्कंधो॥ सें थ यं वा यु वे गा ये प॥ वामस्कंधो॥ सें थ पं पा व न्ये प॥ ह
दि॥ सें थ वं लं वि का ये प॥ उदरो॥ सें थं संहार का ये प॥ नाभौ॥ सें थ हं ह्राग
ल्ये प॥ दक्षस्तने॥ सें थ लं पू ट ना ये प॥ वामस्तने॥ सें थ आं आ मो ये प॥ त
तक्षारे॥ सें थ संपरा ये प॥ हृशात्मनि॥ सें थ हं अं वि का ये प॥ प्राणो॥ सें थ अं
इक्षु शक्तौ प॥ सर्वांगे॥ सें थ संह महा काल्ये प॥ नितम्बे॥ सें थ शकु सु मा यु धा ये
प॥ गुह्ये॥ सें थ अं शुक्रा ये प॥ अण्डयोः॥ सें थ तं ता रा ये प॥ दुर्वो॥ सें थ सें जा
न्ये प॥ दक्षजानुनि॥ प सें क्रिया ये प॥ वामजानुनि॥ प ओं गा य न्ये प॥ दक्षजं



